अगुरुलघु महाकाव्य

महाकवि
श्रमणाचार्य विभवसागर

सम्पादक
डॉ. अभिषेक जैन,
डॉ. आशीष जैन

संकलन
श्रमण शुद्धोपयोगसागर

कृति	:	**अगुरुलघु महाकाव्य**
कृतिकार	:	महाकवि श्रमणाचार्य विभवसागर
शुभाशीर्वाद	:	दीक्षा गुरु गणाचार्य श्री विरागसागर जी
शुभाशीष	:	तप गुरु आचार्य विशुद्धसागर जी
संकलन	:	श्रमण शुद्धोपयोग सागर
सम्पादक	:	डॉ. अभिषेक कुमार जैन 'शिक्षाचार्य' (हिन्दी विभाग) डॉ. आशीष कुमार जैन 'शिक्षाचार्य' (संस्कृत विभाग) एकलव्य विश्वविद्यालय दमोह म.प्र.
प्रकाशक	:	हिन्दी विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय दमोह (म.प्र.)
संस्करण	:	प्रथम, 1000 प्रति
परिमाण	:	425 कविताएँ, 7225 वर्ण, 225 श्लोक
प्रकाशन वर्ष	:	2024, बोरीबली, मुंबई वर्षायोग
प्रसंग	:	श्री पट्टाचार्य महोत्सव, सुमतिधाम, इन्दौर 30-4-2025
समर्पण	:	अक्षरज्ञानदाता गुरुवर श्री विरागसागर जी के स्मरणार्थ
प्राप्ति सम्पर्क	:	टी.के. वेद - मो. 94251 54777 प्रातिपाल टोंग्या, इन्दौर - मो. 93021 06984 आचार्य विभवसागर संघ मो. 97992 45280, 62608 34939
ISBN No.	:	
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, भोपाल मो. : 94250 05624

गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

दीक्षा-शिक्षा गुरुवर

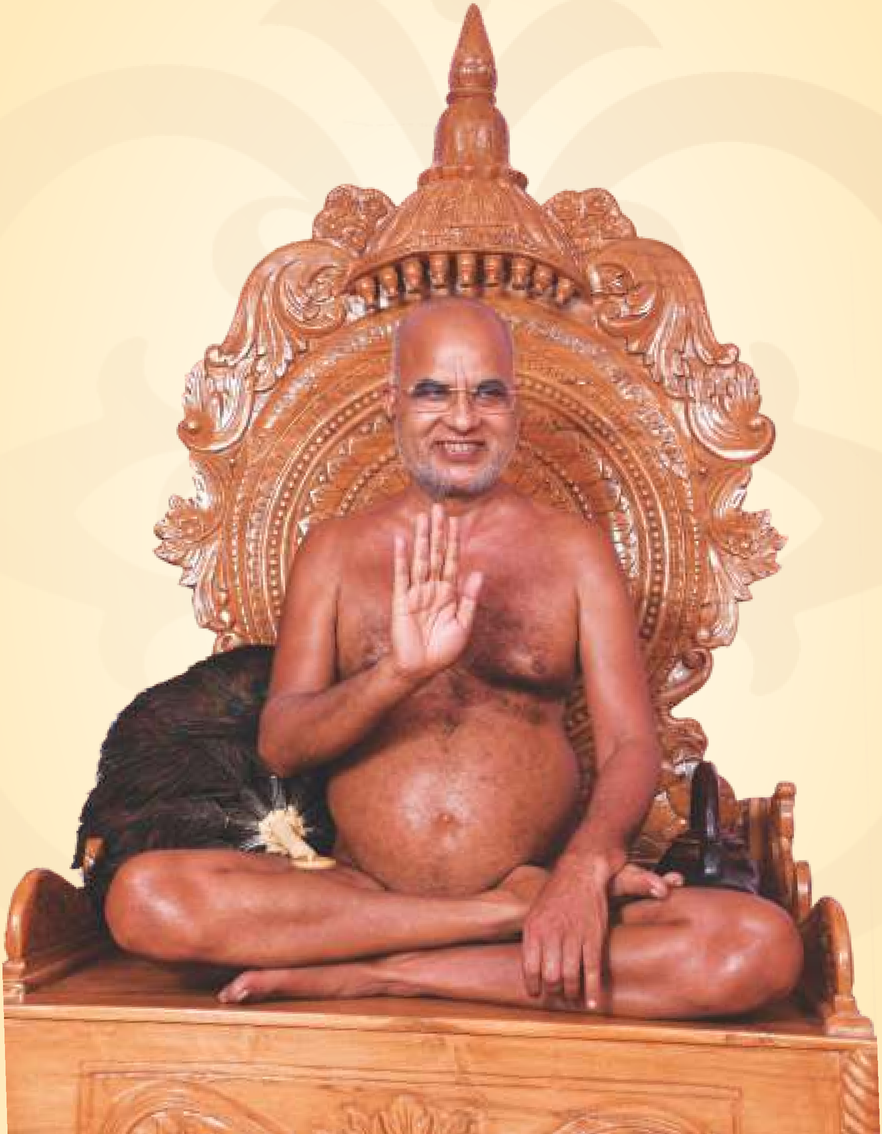

अगुरुलघु महाकाव्य

अंतिम उपदेश

दिनांक : 3-7-2024

जीवन क्षणभंगुर है। पता नहीं, किसके जीवन का कब समापन हो जाये? इसलिए शास्त्रों में, आचार्यों ने कहा-साधुगण पूर्व से ही तैयार रहते हैं। अभी तक इतना विशाल संघ लगभग-लगभग 500-550 शिष्य-प्रशिष्य हैं, और जिनशासन की धर्म ध्वजा फहराते रहे हैं।

इसलिए किसी न किसी योग्य शिष्य के लिए ये जिम्मेदारी सौंपकर के हल्का हो जाना चाहिए। यही जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा है। तीर्थंकर भगवान की आज्ञा है। आगम की आज्ञा है।

हमारे संघ में प्रभावक और कुशल श्रमणाचार्य विशुद्धसागर जी महाराज हैं। और वे इस जिम्मेदारी को पालन करने में सक्षम और समर्थ हैं।

चूँकि, इतने विशाल संघ में हर किस्म के साधक होते हैं। आचार्यगण बड़ी गम्भीरता से, धैर्य से उन सबका पालन करते हैं। हम चाहते हैं कि विशुद्धसागर जी महाराज! ओ अपनी नि:स्वार्थ भावना से, साधुओं में बिना राग-द्वेष के, प्रेम, वात्सलय के साथ सभी का यथोचित ध्यान रखें। चर्या सभी की श्रेष्ठ हो। क्योंकि शिथिलता के संस्कार एक बार आ जाते हैं तो उनको चेंज करना बड़ा कठिन होता है।

तीसरी, वे इन सब बातों का ध्यान रखें। महाराजों में हमारे बहुत सारे महाराज है। विवर्धन सागर जी महाराज हैं, विनिश्चय, विहर्ष विभव आदि-आदि। विहर्ष सागर जी महाराज हैं। सदैव-सदैव जिन्होंने कन्धे-से-कन्धे मिलाकर चले हैं। सहयोगी रहे हैं। भविष्य में भी उनका सहयोग अनवरत बना रहे।

सात आचार्य हैं। आठ व सात उपाध्याय हैं। गणधर हैं। स्थविर हैं। प्रवर्तक हैं। गणिनी माताजी लोग हैं। वो अपने-अपने संघ का अच्छी तरह से पालन करें।

अपन लोग सहयोगी बनें। ऐसा मेरा आपके लिए एक उपदेश है, संकेत है, आदेश है।

साधु जीवन का धैर्य से, गंभीरता से पालन करना और कराना यह आचार्यों का उत्तम दायित्व होता है। इसलिए आज मेरे मन में आया-समय के पूर्व, कल का क्या भरोसा? आज बोल पा रहे। कल बोल पाये या न बोल पायें। आज ध्यान है, कल ध्यान रख पाये न रख पाये। इसलिए एक पूर्व संकेत सभी साधु, सभी शिष्य, प्रशिष्यगण पालन करें।

परम पूज्य आचार्य गुरुदेव विमल सागर जी महाराज और अपने संघ की जो पद्धतियाँ हैं, जो परम्पराएँ हैं उनका भलीभाँति, बिना इनमें समझौता किये पालन करते रहें।

मेरी भावना है सभी में चर्या के एकीकरण रहे, एकता रहे। और भरोसा है-सभी योग्य शिष्य हैं और वे निश्चित इस विषय में सोचेंगे और पालन करेंगे। जैन धर्म की ध्वजा फहराते रहेंगे।

इतने दिनों में मेरे से जाने में, अन्जानें में, जानता हूँ प्रमाद में राग-द्वेष, मोह के वशीभूत होकर के कहीं कोई त्रुटि हो तो सभी लोग मुझे क्षमा करें। और मैं भी सभी लोगों के लिए, सभी साधुओं के लिए क्षमा प्रदान करता हूँ।

अभी वसुनंदी का भी समाचार आया था-उन्होंने भी क्षमा याचना की पवित्र भावना रखी, उनके लिए भी मेरा आशीर्वाद है।

सभी प्रेम, वात्सल्य से धर्म और धर्म की प्रभावना करते रहें।

यही मेरा अशीर्वाद......

नोटः यह संदेश समाधि के एक दिन पूर्व दोपहर 3.00 से 4.00 के मध्य दिया।

लिपि - आचार्य विभवसागर

साभार - जिनवाणी चैनल

अंतिम श्रोता - अरुण कोटड़िया, अहमदाबाद

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का

आशीर्वाद

आज हमारे संघस्थ लगभग 13 निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनि दीक्षाएँ बरासो में सम्पन्न हुईं थी और उनमें सुबह से ही सभी महाराजों के बहुत-बहुत भक्ति परक सभी ने आशीर्वाद लेने के लिए तत्पर हुए थे।

आज उनमें से हमारे संघस्थ श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी महाराज अपने एक ऐसे विभवसागर जी महाराज हैं कि जिन्हें लोग विभवसागर जी के नाम से जानते हो अथवा ना जानते हो लेकिन तेरी छत्रच्छाया भगवन् मेरे सिर पर हो। मेरा अन्तिम समाधि मरण तेरे दर पर हो इस कविता से तो वे देश-विदेश तक पहुंच गए और सारे लोगों में कविता छा गयी। ये समाधि भक्ति छा गई। उन सबके लिए मेरा बहुत-बहुत अच्छा आशीर्वाद है।

वे निरंतर इस प्रकार के धर्म आराधना के साथ रत्नत्रय की आराधना के साथ निर्वाण पथ के पथिक बनें-बनाते हुए शीघ्र ही एक दिन निर्वाण को प्राप्त करें। ऐसे हम उन सबके प्रति शुभभावना रखते हैं और उनके लिए बहुत-बहुत प्रशस्त जीवन के लिए आशीर्वाद देते हैं वे अपने तरक्की करते रहें...।

14.12.2021

24वें मुनि दीक्षा दिवस पर प्राप्त गुरु आशीष

साभार-विरागवाणी चैनल

चर्याशिरोमणी श्री विशुद्धसागर जी महाराज
आचार्य विभवसागर जी महाराज

भेटकर्ता

श्री दिगम्बर जैन संस्थान,
योगीनगर, (बोरीवली मुम्बई)

मंगल भावना

दिगम्बर
जैनाचार्य विशुद्धसागर

दयालु, आर्द्र–हृदय स्व–कल्याण करते हुए पर–कल्याण का भी भाव रखता है। निर्ग्रन्थों की यह दया, करुणा भावना अर्हन्त अवस्था प्रदायनी होती है।

करुणा–हृदय करुणा–भाव से ओत–प्रोत हमारे अनुज कवि–हृदय सरस्वती वर प्राप्त, साहित्य मनीषी, गुरु चरणार बिन्द अनुरागी, सतत श्रमी, यमी आचार्य श्री विभवसागर जी ने अन्तः करण की करुणा को अगुरुलघु कृति में प्रस्फुटित किया। न्याय–नीति का सम्मेलन जिसमें है, यह वह कृति है।

प्रस्तुत अगुरुलघु कृति अवश्य ही भव्यों के हृदय–सरोवरों में शीतल नीर बनेगी। आपकी सिद्ध–हस्त लेखनी सतन गतिशील रहे। अभिनव–अभिनव कृतियों का सृजन होता रहे, वागीश्वरी का कोश वर्धमान रहे, यही मंगल भावना।

इति शुभम् भूयात्
ॐ नमः सिद्धेश्यः

पावन वर्षायोग
नांदणी (महा.) भारतदेश
29–10–2024

प्रस्तावना

आचार्य विभवसागर जी महाराज

हाईकू कविता सूत्र शैली में निबद्ध, अभिनव काव्य प्रणाली में रचित सम सामयिक नवीनतम काव्य रचना। 'अल्प शब्दो में महान संदेश' देने वाली संक्षेप रचना। प्रत्येक कविता में तीन चरण उनमें क्रमशः पाँच, सात, पाँच वर्ण कुल सत्तरा वर्ण वाली वर्णाक्षरी कविता।

विशेषताएँ –

1. अद्भुत, गूढ रहस्यों का उद्घाटन।
2. कवि के काव्य धर्म एवं काव्यानुशासन का प्रयोग।
3. कहान विचारों का चित्ताकर्षक प्रस्तुतिकरण।
4. पाठकों में प्रेम और प्रेरणा भरदे।
5. श्रोताओं को मंत्र मुग्ध करदे।
6. संदेशात्मक काव्य ध्वनि।
7. सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वजनिक, सर्व–हितैषी संजीवनी।
8. आगम, इतिहास, नीति, युक्ति, आचार–विचार धर्म–कर्म के मर्म को प्रस्तुत करने वाली।
9. पाँच वर्षीय आलेखन का मांगलिक समायोजन।
10. न अति गुरु न अति लघु इसीलिए है–

अगुरुलघु

राष्ट्रसंत गणाचार्य दीक्षा–शिक्षा गुरुवर
श्री विरागसागर महाराज के पट्ट शिष्य
श्री विशुद्धसागर महाराज के
पट्टाचार्य महोत्सव पर समर्पित

महाकाव्य की प्रेरक - कविताएँ

1. यहाँ तोता भी, धर्म सूत्र बोलते, संगतिफल।
2. समय चूका, तो सरल कार्य भी, कठिन होता।
3. शिष्य एक न, सभी शिष्य एक हों, गुरु सफल।
4. कार्य सिद्धि का, पहला उपाय तो, धीरता ही है।
5. निवेदन हो, हाथ जोड़ करके, शिष्टाचार है।
6. वाह! क्या बल, कोटि शिला उठा ली, पिच्छी न उठी।
7. वाह! क्या स्मृति, भोगों में भूले रहे, मोक्ष की राह।
8. कर्मों की गति, बड़ी विचित्र होती, सीता से पूछो।
9. पापों से भय, महान पुरुषों को, सदा होता है।
10. परिपक्वता, मिष्टता घोल देती, फलों में देखो।

कुल कविताएँ = 425
कुल वर्णाक्षर = 7225
श्लोक परिमाण = 225

अन्तस-प्रेक्षण

अखिल ब्रम्हाण्ड में साहित्य-सृजन अनेक साहित्यकारों व साहित्य श्रमियों ने स्वरूचि एवं आवश्यकतानुसार स्वचयनित भाषाओं में किया है। भारतीय काव्य परम्परा में प्राकत-संस्कृत-हिन्दी भाषा में काव्य सृजित किये गये। अनेक आगम ग्रन्थों, वेद-पुराणशास्त्रों, स्तोत्र साहित्य, काव्य-शास्त्रों का प्रणयन किया गया। भारत की अनेकविधायें अनतराष्ट्रों में तथा अन्तर्राष्ट्रों की विधायें भारत में उनके साहित्यिक-व्यापारिक यात्राओं के माध्यम से उत्थानित होकर स्थापित हुई। भारतवर्ष का साहित्य व पाण्डुलिपियां- अन्य राष्ट्रों में तथा अन्य राष्ट्रों का साहित्य भारतवर्ष में परिमार्जित, अनुवादित या प्रकाशित होकर पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है। जापानी साहित्य की कविता- जिसे हाइकु के नाम से जाना जाता है। वह भारतीय साहित्यकारों की जापानी यात्रा के माध्यम से भारत में लोकप्रियता को प्राप्त हुआ। यह जापानी साहित्य की सीमाओं को लांघकर विश्वसाहित्य की अमूल्य निधि बन चुका है।

ज्ञातव्य रहे कि सत्रहवीं शताब्दी में ''**मात्सुओ वाशो**'' में कवि द्वारा जापानी साहित्य में 1644-1692 अर्थात सत्रहवीं शताब्दी में **हाईकु** को प्रतिष्ठित किया। जिसे भारतीय साहित्यकार कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जापानी यात्रा के पश्चात् 1919 में बांग्ला में दो कविताओं का अनुवाद किया। वही अज्ञेय द्वारा रचित कविता- '**अरी ओ प्रभामय**' से हिन्दी भाषा में हाइकु का शुभारंभ माना जाता है। प्रोफेसर सत्यभूषण वर्मा का नाम हाइकूकारों में अग्रणी है।

हिन्दी साहित्य के विकास में जैन कवियों व जैन मुनियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस विधा में बींसवी सदी के महाकवि

'मूकमाटी महाकाव्य' प्रणेता जैनाचार्य विद्यासागर मुनिराज ने प्रथमत: लेखनी चलाई जलबिंदु महाकाव्य के रचयिता दीक्षा शिक्षा प्रदाता गणाचार्य श्री विरागसागर जी के शुभाशीर्वाद से 'तेरी छत्रच्छाया भगवन मेरे सिर पर हो' समाधि भक्ति के लेखक सारस्वत महाकवि (डॉ.) जैनाचार्य विभवसागर मुनिराज ने भी पांच वर्षो के अथक काव्यपरिश्रम से **'अगुरुलघु सूत्र'** शीर्षक से हाइकु का काव्य संग्रह वर्ष 2024 में सचित्र प्रकाशित कराया जिसमें अपना घर से आशात्याग तक 113 विषयों पर हाइकु सृजित किये। वहीं द्वितीय हाइकु कविताओं का संग्रह 425 कविताओं में 7225 वर्ण तथा 225 श्लोक प्रमाण **'अगुरुलघु महाकाव्य'** शीर्षक से प्रकाशित हुआ। जिसमें धर्म नीति, न्याय, राजा-मंत्री, गुरू-शिष्य, दानेच्छु-दातेच्छु, वक्ता-श्रोता, प्रकृति में नदी, वृक्ष आदि के गुणों की व्याख्या सूत्रात्मक शैली में सारगर्भित तथ्य को प्रकाशित कर पाठक के मन-मस्तिष्क पर अल्प समय व स्वल्प अध्ययन में सीधा प्रभाव छोडती है। न अत्यधिक बड़ा और न अत्यधिक छोटा कथ्य, जो सत्य को उदभाषित कर देता है। जो शीर्षक की सार्थकता को स्वत: सिद्ध कर देता है।

इस महाकाव्य में हाइकु की शिल्पगत विशेषताओं का समावेश किया गया है। यथा-छन्द, विधान-5,7,5 के क्रम से 17 वर्णों का छन्दविधान हाइकु है न कि अक्षर क्रम का। तुकान्त-अतुकान्त, शब्द-शक्ति, बिम्ब विधान, प्रतीकविधान, मिथक तथा प्रकृति वर्णन-ॠतु वर्णन, मानवीकरण, लोकसंस्कृति, लोकनीतियो-परम्पराओं मान्यताओं, धर्मनीतियों-धर्मोपदेश धार्मिक मान्यताओं-धार्मिक घटना आदि।

'अगुरुलघु महाकाव्य' का अध्ययन कर यह कहा जा सकता है कि

बींसवी-इक्कीसवीं शताब्दी में जैनाचार्यों की परम्परा में आचार्य विद्यासागर के पश्चात् आचार्य विभवसागर मुनिराज ने हाइकु कविताओं पर अपनी चारित्र-तप-दर्शन ज्ञानपूत लेखनी का प्रयोग किया है। **इन दोनों आचार्यों को जैन साहित्य जगत में हाइकु कविता लेखन का प्रेरणा-स्त्रोत या मुख्य आधार स्तंभ कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।** इनके अलावा अनेक मुनियों व आर्यिकाओं ने भी अपनी बात को हाइकु लिखकर जनमानस तक पहुंचाने की सुचेष्टा की। आचार्य श्री विभवसागर जी ने हम दोनों भाइयों को **'अगुरुलघु महाकाव्य'** जैसी सर्वोच्च साहित्यिक कृति का सम्पादन करने का सुअवसर प्रदान किया हम उनके उपकार के सदैव आभारी रहेंगे ऐसे महाकवि के चरणों में उनके सर्वोच्च चारित्र की अनुमोदना सहित कोटि-कोटि प्रणमन

डॉ. अभिषेक कुमार जैन 'शिक्षाचार्य' (हिन्दी विभाग)
डॉ. आशीष कुमार जैन 'शिक्षाचार्य' (संस्कृत विभाग)
एकलव्य विश्वविद्यालय दमोह म.प्र.

पुण्यार्जक

मीत हसमुख गाँधी
साक्षी हसमुख गाँधी

हसमुख धनपालजी गाँधी (पिता)
कविता हसमुख गाँधी (माता)
धनपालजी नानालालजी गाँधी (दादा)
सूर्यकांता धनपालजी गाँधी (दादी)
मनीष धनपालजी गाँधी (काका)
श्रुति मनीष गाँधी (काकी)
दक्ष मनीष गाँधी (भाई)
पार्श्वि मनीष गाँधी (बेहेन)

निवासी : साबला (ज़िला) डूंगरपूर, राजस्थान हाल मुकाम मुंबई
(ऐरोली नवी मुंबई) के द्वारा निजवाणी प्रकाशन हेतु – मोबाइल : 9833841972

यहाँ तोता भी
धर्म सूत्र बोलते
संगतिफल।

आपकी चर्या
मूलाचार शास्त्र का
दर्श कराती।

दुष्ट संगति
क्या-क्या अनिष्ट पैदा
नहीं करती!

प्रयत्नहीन
स्वप्न राज्य भोगते
यथार्थ नहीं।

जगजीवों की
उन्नति-अवनति
पूर्व संस्कार

वह कौन है?
भाग्यशाली मनुष्य
जिसे न पाये?

ओ मेरे भाग्य!
सेवा कर गुरु की
जगे सौभाग्य

आचार्य श्री जी!
भक्तित्रय पूर्वक
सदा नमोस्तु...!

धर्म पात्र से
धर्म तीर्थ चलेगा
दान दीजिए

कार्यपात्र से
कार्य आगे बढ़ेगा
दान दीजिए

सेवा करते
सेवक न बनते
सेव्य बनते

तीर्थपात्र से
तीर्थचला-चलेगा
दान दीजिए

थोड़ा-थोड़ा हो
धी, धैर्य, धर्म, धन
सुमेरु बने।

अणु-अणु भी
सदा संचय करो
सुमेरु बने।

गुरु के पास
हर समय खास
रखो विश्वास

किसको? कब?
अपार पुण्य मिला
एक दिन में

विघ्न आते हैं
महापुरुषों को भी
पुण्य कार्य में

धर्माचरण
पराग्रह से नहीं
आत्मभाव से

शेर मारता
श्यार खाता उसको
क्यों पाप लादे?

दुष्ट! अग्नि सा
स्वयं को जलाता है
आश्रयी को भी।

बीज खाये तो
फसल कहाँ पाये
पछतायेगा!

हम भटके
दूसरे न भटकें
इतना करें

नीति से भोग
पका खेत काट ले
ऊसर न वो

सुख सृष्टि के
सृजेता बीज आप
बोयें तो उगें

दान धन से
प्रयोजन सिद्ध हो
गढ़े धन क्या?

प्रियवचन
और दान के द्वारा
संतुष्ट करो

धन तो वही
जो प्रयोजन साधे
जमा धन क्या?

द्वार खोल दो
मैत्री ओर प्रेम के
प्रभावना हो

मन पावन,
सेवक व शकुन
शुभ के चिन्ह

कर्त्तव्य लीन
साधु को देखकर
आनंद होता

झुककर दो
बादल की तरह
ऊपर उठो

वेशभूषा भी
जाति, कुल, उम्र के
अनुसार हो।

दो सहर्ष दो
चार गुणा मिलेगा
कांक्षा न रखो

जल की बूँद
पास नहीं रखता
बहाता नदी

लाभ उठाओ
लोभ में नहीं पड़ो
स्थान बदलो

समुद्र नहीं
गिरि से बहे नदी
भाव तो देखो

नीति मार्ग तो
संस्कृति, सभ्यता का
राजमार्ग है।

न्यायमार्ग में
नीतियाँ, चुनौतियाँ
बनके आतीं

समय तो दो
धर्म, अर्थ, काम में
समान रूप

हित छोड़के
धन कमाने वाला
नर वा पशु?

धन का फल
मन पवित्र रहे
तन स्वस्थ हो

निरोगी तन
शुभोपयोगी मन
धन का फल

इन्द्रियजय
सर्वकार्य सिद्धि का
महामंत्र है।

वशीकरण?
इष्ट में अनाशक्ति
इन्द्रियजय

नीतिशास्त्र के
अध्ययन का फल
इन्द्रियजय

काम, आसक्ति
असाध्यरोग छूटे
गुरु भक्ति से

कामासक्त के
धर्म, धन, तन भी
नष्ट हो जाते

मित्र की रक्षा
शत्रु को सजा देना
राजधर्म है।

निज कुल को
जो पावन करदे
वह पुत्र है

विना पुत्र के
गृहस्थ जीवन भी
पिता का ऋणी

ज्ञान रहित
अभ्यासहीन शिष्य
गुरु का ऋणी

जिनेन्द्र पूजा
भक्ति रहित नर
देवता ऋणी

ओ धन्य भाग्य
नैष्ठिक ब्रह्मचारी!
आत्मा ही पुत्र

तृष्णा नदी से
पार लगाने हेतु
ध्यान नौका है

क्रम सम्पदा
सदाचार सम्पदा
श्री सदा-सदा

जो ज्ञानवान
और विनयवान
ओ बुद्धिमान

नीति रहित
शूरवीरता कैसी?
सिंह के जैसी

नीति शून्यता
शस्त्र हीन योद्धा सी
स्वघातक है।

अज्ञानता ही
पशुता की प्रतीक
छविअंकन

नीतिशास्त्र औ
सदाचार रहित
युवराज न।

नीतिविज्ञान,
सदाचार, शूरता
राजा के चिन्ह

परम्परा की
रक्षा, पराक्रम से
होती आयी है।

सदा-सर्वत्र
जो याद आता रहे
वह धारणा

पाप सुलाता
और, पुण्य जगाता
सोओ न, जागो

व्यसनी मंत्री
राजा के लिए कैसा?
पागल हाथी

पर्यावरण
प्रकृति वरण है
हरण नहीं

पर्यावरण
पापाचरण नहीं,
पुण्याचरण

रुचि जागती
सम्यग्दर्शन हो तो
धर्मकार्य में

गुरु का सुख
शिष्य का सुख होता
राजा-मंत्री सा

हित की प्राप्ति
अहित परिहार
सत्पुरुषार्थ

समय चूका
तो सरल कार्य भी
कठिन होता

मंत्री एक न
सभी मंत्री एक हों
राजा सफल

शिष्य एक न
सभी शिष्य एक हों
गुरु सफल

विषम संख्या
हो, विषम स्वभाव
कभी भी नहीं।

हित कार्य में
विषम संख्या भली
स्वभाव नहीं।

पचे सो खाओ
भोजन हो या धन
रुचे सो गाओ

गुरु शिष्यों से
तरु शाखाओं से ही
छाया-फल दें

धन से ज्यादा
सहायक पुरुष
साथ देते हैं

एक इंसान
यदि हो सावधान
करे सौ काम

राजा एक हो
सहायक अनेक
लाभ प्रत्येक

आचार्य एक
शिष्य संघ अनेक
लाभ-प्रत्येक

बहुत मूर्ख
एक भी कार्य नहीं
कर सकते

शिशु दूध न
पिये, तो माँ का थाप
लगाना ठीक

अकेला व्यक्ति
क्या-क्या कर सकता
समूह सही

अविवेक क्या?
आग लगने पर
कुआ खोदना

समय पर
सहायक पुरुष
नहीं मिलते

सुपात्र दान
उपजाऊ भूमि में
बीज के जैसा

कार्य पुरुष
समय पर कार्य
करते ही हैं।

भोजनबेला
सभी सहायक हैं
कौन पराया

गरम जल
ठण्डा हो ही जाता है
स्वभाव जो है

शिवकण्ठ में
लगा विष, विष है
अमृत नहीं

कर्तव्य शून्य
विद्वान् भी, भार लादे
गधा समान

शास्त्राधिकारी
न मंत्रणाधिकारी
केवल शान्ति।

मूर्ख से सिद्धि
अन्धे हाथ बटेर
क्या सदा-सदा?

संज्ञान शून्य
ज्योति रहित नर
क्या देख सके?

सम्पत्ति आना
स्वामी की प्रसन्नता
पर निर्भर

क्षत्रियों को तो
लड़े विना भोजन
पचता नहीं।

जिसे मैं चाहूँ
उसे ही मेरा मित्र
तो मैत्री कैसी?

बाड़ी फसल
थाली भोजन खाये
खाने वाला क्या?

दो गुण विद्या
कमनीय कामिनी
धन हो देखो

निर्लोभता औ
पवित्रता चाहिए
धन न देखो

जिस के साथ
मन फट चुका हो
मैत्री न करो

वृक्ष अपने
फल-फूल न खाते
परोपकार

वह देव! जो
परधन, परस्त्री
में निर्विकार

कष्ट अधिक
फल बहुत कम
मूर्ख के चिन्ह

मृगभय से
क्या कोई बुद्धिमान
खेती छोड़ता?

ऐसा कौन है?
जिसे कार्यारम्भ में
विघ्न न आये।

विपदाकाल
धैर्य धारण करें
महापुरुष

कार्य सिद्धि में
पहला अन्तराय
अधीरता है।

कार्य सिद्धि का
पहला उपाय तो
धीरता ही है।

सही नेता में
एकता-अनेकता
दोनों चाहिए।

विद्याभ्यास से
कार्य में कुशलता
प्रकट होती।

विविध कार्य
विद्या अभ्यास से ही
सिद्ध होते हैं

जितने कार्य
उतनी विद्याएँ भी
विद्या से कार्य

दगा न करो
दगाबाज इंसान
बाज होता है।

भला किया है
यह बताकर के
बैर क्यों लेते

गुप्त भलाई
सोते के पाँव दबा
देना जैसा है।

श्रेष्ठ बात भी
अकाल में कहना
ऊसर बीज

परोपकार
करने असमर्थ
प्रसन्नता क्या?

पश्चात् सोचना
जल बहने पर
बाँध-बाँधना

विन वेतन
समर्पित मन ही
कार्य करता

मेरे प्रभुजी!
मेंढक हृदय में
समा जाते हैं।

दूरी बड़ती
दूरियाँ बढ़ाने से
पास में आओ

न्यायमार्ग से
नीचे धकेल देती
बुरी आदतें।

बुरी आदतें
भले इंसान को ही
बुरा बनाती

कंजूस धन
चाण्डाल तालाब सा
अनुपयोगी

गुणवान् वक्ता
गुण युक्त वाणी दे
सभासदों को

पहले देखो
आग लगने पर
कुआ न खोदो

दिन सात हैं
भला करो या बुरा
आपके हाथ

नरक सात
क्योंकि व्यसन सात
बुरा नतीजा

बुरे काम का
बुरा नतीजा होता
किया सो भोगो

अहं में न दो
आँधी में गिरे फल
काम न आते

योगपुरुष!
वह कार्य न करो
जो अयोग्य हो

जगाने वाले!
जग जाग जायेगा
जगा के देखो

दिन में सोना
रोग रूपी सर्पों को
जगाना ही है।

निज पत्नि में
आसक्ति कम करो
शक्ति बचाओ

नदी में बाढ़
गन्दे पानी की आती
निर्मल नहीं

परिस्थितियाँ
आती हैं, चली जाती
धीरज धरो

सही समझो
सँभल जाओगे तो
सफलता है।

लोकपुरुष
उपकार के लिए
धन देता है।

बुरी आदत
तो आज ही छोड़ दो
भले आदमी!

उपकारी का
कृतज्ञता प्रकाश
भी उपकार

कृतघ्न नर
परोपकार धर्म
नहीं मानता

उत्साही नर
शूरता, चतुरता
शीघ्रता रखे

ऐश्वर्य फल
आज्ञा पालन में ही
समाहित है

आलस्य-निद्रा
आपत्तियों के द्वार
खोलके आते

गुरुजन को
आज्ञा भंग होने से
प्राण संकट

राजा का द्वार
राजदर्शन हेतु
सदा खुला हो

रिश्वत घोर
उन्नतिशील स्वामी
को बेच देते।

अन्यायमार्ग
महल गिराकर
कील लेने सा।

अन्याय कर्त्ता
पैरों पर कुल्हाड़
पटकता है।

भेंट तभी लो
जब प्रयोजनार्थी
का कार्य करो

भेंटदाता से
ये भेंट किसलिए?
इतना पूछो

पूज्यों के साथ
अधिक न बोलना
विवाद भी न

यह मनुष्य
मनुष्यदास नहीं
धनदास है।

क्या एक बार
में धोया हुआ वस्त्र
निर्मल होता?

मित्र बनायें
अधिकारी कभी न
मित्रता रहे

प्रज्ञ अपनी
गुण प्रशंसा सुन
लज्जित होते।

राजा को स्वयं
काम करना पड़े
तो मंत्री ही क्यों?

घास का बोझा
स्वयं उठाकर क्या
हाथी खाता है?

दूध की रक्षा
विलाव के लिए तो
कभी न सौपो

लाभ दिखे तो
आय से अधिक भी
व्यय करदो

सफल होने
कार्योपयोगी बुद्धि
औ पुरुषार्थ

अन्नसंग्रह
धनसंग्रह से भी
श्रेष्ठतम है।

सर्व रसों में
नमक संचय ही
सर्वश्रेष्ठ है।

स्त्री और धन
दोनों के संरक्षक
स्वयं ही रहो

मित्र हो कैसा?
दूध में पानी जैसा
सदा साथ दे।

नीम का पेड़
गन्ना सींचने पर
क्या मीठा होता?

प्रकृति को तो
विधाता क्या बदले
जैसी है सो है।

तृप्त श्वान भी
क्या हड्डियाँ चबाना
छोड़ सकता।

श्रेष्ठ माँ-पिता
पुत्र का श्रेष्ठ पुण्य
हो तो मिलते

माता-पिता ही
शरीर लक्ष्मी देते
राज्यलक्ष्मी भी।

वाह! किसान!
दूसरों का खेत ही
जोतोगे तो क्या?

गुरु की वाणी
नीम की दातोन सी
स्वस्थ बनाती

समय खोना?
फल लगने पर
फूल तोड़ना

अति न करो
वृक्षों की अतिखुशी
आँधियाँ लाती

प्रसन्न मन
सेवक व शकुन
शुभ के चिन्ह

सौभाग्य आया
तीर्थ वन्दना करो
हे भाग्यशाली

आओ! करलो
तीर्थ वंदना कर
जीवन धन्य

बीज से फल
अधिक ही फलता
फलकाल में

सतपुड़ा का
नैसर्गिक सौन्दर्य
बावनगजा

घुने बीजों से
फल की आशा कभी
फल न देगी

समर्पण से
अधिक ही देते हैं
इष्ट देवता!

गति कम हो
प्रगति अधिक हो
सफल यात्रा

मेरा प्रेम ही
संवेदना बनेगा
तुम्हारे लिए

मैं कब हारा
मैं तो सदा सहारा
मित्र! तुम्हारा

थको न हारो
उठो संकल्प साधो
लक्ष्य पाना है

मेरे गुरु जी!
धर्म के आकाश में
ज्ञान के सूर्य

खाँसो भी मत
चिड़िया डरती है
दाना खाने से

सतपुड़ा की
पहाड़ी पर बसा
बावनगजा

बावनगजा
अक्षय विशुद्धि का
महाभण्डार

प्रिय दर्शको!
तीर्थ वंदना करो
कर्म बंध न

प्राचीन तीर्थ
हमारी सांस्कृतिक
धरोहर हैं।

खोज ही लूँगा
खोज में निकला हूँ
अपना प्रभु!

दान न दिया
अभय दान दिया
धर्म हो गया

भारत देश
संस्कृति-सभ्यता का
तीर्थ स्थल है।

श्वास थाम लों
आवाज भी डराती
कोई डरे न

उस ज्ञान से
जो चर्या में न ढले
क्या लाभ होगा

तुम दानी हो
नादानी मत करो
विघ्न से बचो

दयादृष्टि पा
चिड़िया नीचे आयी
दया दिखा दो

खाँसों भी मत
चिड़िया उड़ जाये
तो विघ्न होगा

वन के पशु
वन का सहीमार्ग
जानते ही हैं।

चिड़िया आयी
दान चुगती रही
अभय दान

पदचाप भी
भय पैदा न करे
अभय दान

कच्चा अंगूर
स्वादिष्ट किसमिस
नहीं होता है।

खोयेंगे नहीं
आपको खोज लेंगे
खजाना जो हो।

जिनशासन
चतुर्विध संघ से
जयवंत हो

आहार दिया
जी हाँ! आधार दिया
मोक्षमार्ग में।

स्वभाव ज्ञाता
ज्ञायक स्वभाव में
मग्न रहता

कवि की गति
रवि से आगे होती
त्रिभुवन में

अध्यात्म शास्त्र
आत्म शांति प्रदाता
श्रेष्ठ शास्त्र है।

शुभचिंतक
से प्रेरणा पाते हैं
श्रेष्ठ चिंतक

शुभकार्य को
सदा बहुमान दो
महान बनो

मैं अंगूर था
किसमिस हो गया
परिपक्वता

गुरु तस्वीर
गुरु सी तकदीर
जगा देती है।

जी! अर्थाभाव
प्रगति में बाधक
नहीं बनेगा

आपके श्रम
सापेक्ष सहयोग
से सिद्धि मिले।

श्रम आपका
सफलता हमारी
सिद्धि सभी को

सेवा का फल
सहयोग के लिए
सभी खड़े हैं।

श्रुतज्ञान को
प्रस्तुत करना ही
प्रवचन है

आप आये तो
श्रमण युग आया
धन्य हैं आप!

अपना कार्य
अपना आनंद लो
दीक्षा उत्सव

समझ हो तो
सब समझ आता
सही समझ।

ज्ञान में लोक
उनसे ज्ञान पाने
ये तीनलोक

मेरा ज्ञान ही
मेरा आनंद बने
सम्यग्ज्ञान हो

सम्यग्ज्ञान ही
आत्मीय आनंद का
श्रेष्ठसाधन

शुभकार्य में
सहयोग के लिए
शुभाशीर्वाद

पूज्य के प्रति
आदर पूर्ण दृष्टि
सच्ची पूजा है।

स्वाधीन कार्य
स्वाधीन आनंद लो
दीक्षा धरके

निवेदन हो
हाथ जोड़कर के
शिष्टाचार है।

मौका चूके तो
सिर्फ पछताओगे!
संयम धारो।

मृदुभाषण
महान पुरुषों की
कुलविद्या है।

गुणीआयें तो
दरवाजा खोल दो
सत्कार करो

गुण औ गुणी
दोनों मेरे देवता
दोनों की पूजा

एक पढ़ो तो
दो पढ़ने मिलेगा
जग की रीति

पुराण ही तो
प्राणों का आधार है
पढ़ो तो दिखें

परम्परा से
परोपकार भला
करके देखो।

आज के दिन
पूरा नहीं सीखोगे
किन्तु कुछ तो।

परहित में
लगा मन अवश्य
सुख पायेगा

ज्ञानी बनने
जिनवाणी देकर
धर्मदान दो

प्रसन्न मन
आगामी शुभ-लाभ
की सूचना है

नीचे तो देखो
नीचा मत दिखाओ
महान बनो

गुरु समीप
विनय भाव बैठो
विद्या आयेगी

निज में लौटो
निज आनंद लूटो
सामायिक में।

न माँ खराब
नहीं पिता खराब
कर्म खराब

गुण कीर्ति का
औ श्रम उन्नति का
मूल मंत्र है

मैं दूर नहीं
मैं दूर से पास हूँ
विश्वास रखो।

गुरु सेवा में
समर्पित जीवन
धन्य हैं आप!

समुद्र जल
पिया तृप्ति न हुई
ओस चाटते?

तप तो तपो
केवलज्ञान होगा
प्रभु को हुआ

निर्दोष तप
समाधिमरण को
सिद्ध करता

जहाँ आसूँ की,
कीमत न हो वहाँ
मत बहाओ

मूर्ति स्थापना
से सदा यश कीर्ति
स्थापित होती।

पढ़ो, लिखो तो
लेखपाल न बनो
लेखक बनो

जो जन्म जेता
सो मोक्षमार्ग नेता
हो नम्र माथा

सफलता में
शिक्षा, संस्कार और
सदा मैत्री है

सदा संयमी
सर्वत्र संयमी हो
श्रेष्ठ साधुता

दु:ख में धैर्य
सुख में वैराग्य हो
सुखी जीवन

मोही जीवों से
भववर्धक चेष्टा
हो ही जाती हैं।

श्रुत देवता
सिद्ध करलो, सब
देवता सिद्ध

श्रुतदेवता
सिद्ध कर रहा हूँ
गाथा रटके

यह सम्मान
आपको गतिमान
बनाये रखे

श्रमणचर्या
जैन धर्म की श्रेष्ठ
प्रयोगशाला

आत्मा की शांति
विश्व की सर्वोत्तम
उपलब्धि है।

नवधा भक्ति
श्रावक जीवन को
धन्य बनाती

धर्म का दान
प्रवचन करना
जिनवाणी से।

आत्मा ने लिखा
सहयोग हाथ का
आपके लिए

दश धर्म तो
संवर-निर्जरा के
श्रेष्ठ उपाय

गुरुसेवा में
सहयोग के लिए
श्रेष्ठ सम्मान

मुनि संघ को
आवास दान देना
महान दान

हे मुनिवर!
प्रत्यक्ष मोक्षमार्ग
सदा नमोस्तु

आत्म शुद्धि का
पावन अवसर
पर्यूषण है

अपना भात
अपने घर पका
स्वाद आयेगा

आत्म-शान्ति का
सहज उपाय है
कषायनाश

दान करना
दान चिन्तामणी माँ
अत्तिमब्बे सा।

निष्प्रमाद हो
व्रत पालन कर
भव तरने।

शुभ तो करो
लाभ होगा ही होगा
मुझे हुआ है

परम्परा न
परोपकार देखो
परस्पर में

समता भाव
शुद्धात्म प्रतिष्ठा का
महामंत्र है।

हम अपने
महान विचारों से
महान होंगे।

सम्मान पाना
सज्जनों की संगति
करो तो मिले

श्रुत चिन्ता ने
षट्खण्डागम दिया
चिन्ता हो ऐसी

नयन तीजा
सही नतीजा देता
खोलो तो सही

मातृ चिन्ता ने
गोम्मटेश्वर दिये
चिन्ता हो ऐसी

गति कम हो
प्रगति अधिक हो
सफल व्यक्ति

सुई बनना
कैंची नहीं बनना
जोड़ो, काटो न।

मेरा विचार
मेरा अविष्कार है
मैं वैज्ञानिक

सहयोग की
भावना का प्रयोग
प्रेम से करो।

श्लोक रटना
श्रुत देवता को ही
सिद्ध करना

जी! जी! कहके
जीतो जी, जगत में
जीते रहोगे

थको न हारो
उठो संकल्प साधो
लक्ष्य पाना है।

कष्ट समय
वह गुलाब देखो
काटों में खिला

जग के पाप
जिस ध्यान से छूटें
वे श्री जिन हैं

मीठी मुस्कान
मन मोह लेती है
माँ की तरह

अधिकारों की
माँग करने वाले
कर्त्तव्य पालें।

जागना हो तो
गुरु के पास रहो
जल्दी जागोगे

कृपा तो करो
कष्ट क्यों न मिटेंगे
विश्वास रखो

मित्र! गुलाब
काँटो में खिलता है
सेज पर न।

महापुरुष
कष्टों में पलते हैं
भोगों में नहीं।

निर्विकार हो
मोह क्षोभ तज दे
दिगम्बर हो।

लक्ष्य को छूना
लक्ष्य पर टिकना
सही लाभ क्या?

एकाग्रता ही
पूर्ण समग्रता की
सम्पादिका है

जो लिखता है
वह कुछ रखता
विश्व के लिए

श्रेष्ठ लेखन
महान उपहार
विश्व के लिए

आय में नीति
व्यय में रीति और
दान में प्रीति

कल चाहते
आज तो दे दो भला
फिर मिलेगा

अच्छा विचार
खुशबू ही देता है।
दे दो या ले लो

चिता सरीखी
चिन्ता शीघ्र जला दो
चिदानन्द लो

रत्नत्रय की
रक्षा करना, सदा
रक्षाबंधन

रत्न भी बाँटो
पूर्ण आदर साथ
हे श्रेष्ठ दाता!

मैं कब जागा
मैं नहीं बताऊँगा
तू तो मत सो

गुरु शिष्य की
श्रद्धा का त्यौहार है
गुरु पूर्णिमा

समयसार
समवसरण का
शास्त्रराज है

स्वाध्याय तप
मन सुस्थिर होगा
करके देखो।

क्या कर रहे?
स्वरूपानुसंधान
स्वसदन में

लक्ष्य को पाओ
तुम्हारे विरोधी भी
पूजा करेंगे।

ज्ञानी का सुख
औ अज्ञानी का दुख
वह ही जाने

शुभ कार्य में
सहयोग के लिए
श्रेष्ठ सत्कार

महापुरुष!
बीते हुए सुकाल
का स्मरण दें

सामायिक में
स्वरूप रमण हो
रूपरेखा न

गुरुदर्शन
सर्वोषधि जैसा ही
आरोग्य देता

समीचीनता
प्रेम-क्षेम जगाती
सदा सुहाती

शुद्ध भाव से
आत्मा शुद्ध होता है
शुभ से शुभ।

सच्चेज्ञान से
आत्मा में सुख सिन्धु
लहराता है।

वाह! क्या बल
कोटि शिला उठा ली,
पिच्छी न उठी।

मोह सर्प है
महामंत्र तो जपो
विष न चढ़े।

आत्मकेन्द्रित
आराधना-साधना
मोक्षदायिनी।

वाह! क्या स्मृति
भोगों में भूले रहे
मोक्ष की राह।

साधु का आना
रत्नत्रय का आना
हमारे भाग्य

तीर से नहीं
तीर्थ से जीव रक्षा
करे सो वीर

जो धूप सहें
वे छाया सदा देते
वृक्षों को देखो।

तू भटक न
विषयों की राह में
दु:ख पायेगा

आसन पर
आनंदित आनन
आनंद देता

उत्कर्ष पाना
उपसर्ग भी हो तो
सहन करो

यष्टि से नहीं
दृष्टि से काम करो
सृष्टि भली है

बुद्धि का व्यय
चिन्ता करने में न
चिन्तन में हो

कर्तव्य निष्ठा
निजात्मप्रतिष्ठा का
मूलमंत्र है।

समय बीते
प्रभुवर अर्चा में
तत्त्व चर्चा में

आचरण में
उसे ही उतारें जो
भव से तारे

पाप न छूटे
पाप की भावना तो
छोड़ सकते

परोपकार
करने में उदार
महापुरुष

एक भारत
अखण्ड भारत हो
मेरा सपना

आज्ञा पालन
यथोचित रीति से
प्रेम पूर्वक।

आत्म विशुद्धि
मुनि की पहिचान
ज्ञानी कहते

अपना घर
देव, शास्त्र गुरु का
आयतन हो।

मंदिर नया
प्रतिमा प्राचीन हो
अतिशय हो।

प्राचीन तीर्थ
अक्षय विशुद्धि के
महाकेन्द्र हैं।

उपयोग का
उपयोग कर लो
हे उपयोगी!

दान में अहं
नादान ही करता
दाता कभी न।

प्राणी संयम
इन्द्रिय संयम, दो
संयम धारो।

दयालु जीव
रात्रि भोजन नहीं,
भजन करें।

ओ! निर्विकार
दिगम्बर मुद्रा भी
अर्हन्त मुद्रा।

वात्सल्य अंग
धर्म का हृदय है,
हृदय तो हो।

साधु जीवन
निर्विकार मन का
प्रमाण-पत्र

सब न त्यागो
अनावश्यक त्यागो
त्याग धर्म है।

देनदार न
दानदातार बनो
मन हरषे।

समयसार
शुद्धात्म प्रकाशक
परमागम।

कार्य में रुचि
कर्त्तव्य पालन का
महामंत्र है।

श्रम में आस्था
कर्त्तव्य पालन का
सिद्धमंत्र है।

अन्य को कष्ट
न पहुँचे यही है
सदाचरण।

सत्य, अहिंसा
कर्त्तव्य का आधार
होना चाहिए।

अपव्यय ही
निर्धन बनाता है
दान कभी न।

श्रृंगार नहीं,
संस्कार भी चाहिए
श्रेष्ठ जीवन।

श्रमकर्ता ही
श्रमणत्व पाता है
श्रमहीन न।

कर्त्तव्य करो
समाज विकास का
यही मंत्र है।

विकारी मन
इन्द्रियदास होके
दुखी जीता है।

अनुशासित
परिवार, समाज
विकास पाता।

श्रेष्ठ व्यवस्था
श्रेष्ठ अनुशासन,
कठोरता न।

उपकार को
स्वीकार किया हो तो,
चुकाना सीखो।

कर्म सुंदर,
वचन मधुर हो
मन पवित्र।

मैत्री भावना
समाज को उन्नत
बना देती है।

मनोविनोद
तत्त्व-ज्ञानमय हो
आनन्द देता।

महाकरुणा
महापुरुष करें,
नि:स्वार्थ भाव।

करुणाभाव
पारस्परिक प्रेम
जागृत करे।

करुणाभाव
समाजगठन का
श्रेष्ठ सिद्धान्त।

भ्रष्टाचार ने
मानव समाज को
कुपथ दिया।

प्रेम के बिना
विशाल ऐश्वर्य भी
सुख न देगा।

भेदभाव न
भेदविज्ञान तो हो
विवेकवान।

आत्मीय प्रेम
मानव समाज औ
पशु चाहते।

जानवर भी
जानकार होते हैं
प्रेमभाव के।

समाज में हो
लोकहित भावना
समाज सुखी।

सहानुभूति
सामाजिक एकता
का महाधर्म।

दु:ख सहो तो
सहानुभूति जन्मे
अपने मन।

आदर्शशिष्य
सदा पालन करें
गुरु आज्ञा का

दाता दान दे
प्रतिदान न चाहे
सफल दाता।

निश्छल प्रेम
अद्भुत रहस्य है
स्थायी मैत्री का।

अन्य की गल्ती
देखने के पहले
स्वनिरीक्षण।

मनतरंग
हिंसक, अहिंसक
दो प्रकार की।

स्वनिरीक्षण
ईमानदारी से हो
दोष मिटेंगे।

निवृत्ति मार्ग
आसान तो नहीं है
पर श्रेष्ठ है।

निज बुराई
पर में भलाई ही
देखना भला।

शुद्धभाव से
आत्मा शुद्ध होती है
शुभ से शुभ।

पाप छोड़ दो
दु:ख छूट जायेगा
छोड़ के देखो।

चारित्र धर्म
साम्यभाव में होता
धारो तो सही।

मोह छुड़ा दे
मोक्ष पद दिला दे
धर्म है वही।

उद्वेग नहीं
वेग हो संवेग हो
निर्वेग होने।

विजय पाने
अपनी हीनता न
दृढ़ विश्वास।

हमारा जन्म
लेने के लिए नहीं,
देने के लिए।

कर्मों की गति
बड़ी विचित्र होती
सीता से पूछो?

कल्पवृक्ष भी
पुण्यवानों को सदा
फल देते हैं।

आम का पेड़
अपना स्वाद कभी
नहीं लेता है।

कल्पकाल में
चौबीस तीर्थंकर
धर्मनायक।

अनुशासन
समाज को उन्नत
सुखी बनाता।

अनुशासन
गतिशील बनाता
प्रगति देता।

गुरु आज्ञा भी
गुरु से बड़ी होती
गुरु ने कहा।

अनंतज्ञान
अनंतसुख देता
जिन ने कहा।

साधना करो
आराधना भी करो
विराधना न।

शुद्ध को जानो
तो शुद्ध को पाओगे
अनुभव से।

कम खाऔ
कमाकर के खाऔ
स्वस्थ्य रहोगे।

आलस तजो
शास्त्र अभ्यास करो
स्वाध्याय तप।

कल्पना करो
सौ कल्पनाएँ, एक
काम करेंगी।

केवलज्ञान
ज्ञेय अनंतानंत
ज्ञान में आयें।

आत्मज्ञान में
झलकें लोकालोक
छलकें नहीं।

पूर्व प्रशंसा
पश्चात् निन्दा करना
निर्दयता है।

भाव गद्गद् हों
पवित्र भावनाओं
का परिचय।

समता और
सरलता, श्रमण
का परिचय।

यदि बड़े हो
बड़प्पन दिखाओ
तो बड़े सही।

जिनके द्वारा
मुझे वैराग्य आये
वे मेरे मित्र

विभाव त्यागो
आत्म स्वभाव रमो
सर्वज्ञ हो जा।

विभाव त्यागी
स्वाभाव अनुरागी
सर्वज्ञ होओ।

इन्द्रियज्ञानी
सर्वज्ञ नहीं होता
अज्ञ होता है।

मन्दोदय है
दु:ख सह रहा हूँ
समताधर

पापों से भय
महान पुरुषों को
सदा होता है।

परिपक्वता
मिष्टता घोल देती
फलों में देखो।

चित्त प्रसन्न
दृष्टि स्नेह भरी हो
मेल-मिलाप।

समाधि-भक्ति

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो॥

जिनवाणी रसपान करूँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ।
आर्यजनों की संगति पाऊँ, व्रत-संयम चाहूँ ॥
गुणीजनों के सद्गुण गाऊँ, जिनवर यह वर दो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो॥ 1॥
तेरी............. ॥

परनिन्दा न मुँह से निकले, मधुर वचन बोलूँ।
हृदय तराजू पर हितकारी, सम्भाषण तौलूँ॥
आत्म-तत्त्व की रहे भावना, भाव विमल भर दो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो ॥ 2॥
तेरी............. ॥

जिनशासन में प्रीति बढ़ाऊँ, मिथ्यापथ छोड़ूँ।
निष्कलंक चैतन्य भावना, जिनमत से जोड़ूँ॥
जन्म-जन्म में जैनधर्म, यह मिले कृपा कर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 3॥
तेरी............. ॥

मरण समय गुरु, पाद-मूल हो सन्त समूह रहे।
जिनालयों में जिनवाणी की, गंगा नित्य बहे॥

भव-भव में संन्यास मरण हो, नाथ हाथ धर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 4॥
तेरी............. ॥

बाल्यकाल से अब तक मैंने, जो सेवा की हो।
देना चाहो प्रभो! आप तो, बस इतना फल दो॥
श्वास-श्वास, अन्तिम श्वासों में, णमोकार भर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 5॥
तेरी............. ॥

विषय कषायों को मैं त्यागूँ, तजूँ परिग्रह को।
मोक्षमार्ग पर बढ़ता जाऊँ, नाथ अनुग्रह हो॥
तन पिंजर से मुझे निकालो, सिद्धालय घर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 6॥
तेरी............. ॥

भद्रबाहु सम गुरु हमारे, हमें भद्रता दो।
रत्नत्रय संयम की शुचिता, हृदय सरलता दो॥
चन्द्रगुप्त सी गुरु सेवा का, पाठ हृदय भर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 7॥
तेरी............. ॥

अशुभ न सोचूँ, अशुभ न चाहूँ, अशुभ नहीं देखूँ।
अशुभ सुनूँ ना, अशुभ कहूँ ना, अशुभ नहीं लेखूँ॥
शुभ चर्या हो, शुभ क्रिया हो, शुद्ध भाव भर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 8॥
तेरी............. ॥

तेरे चरण कमल द्वय, जिनवर! रहे हृदय मेरे।
मेरा हृदय रहे सदा ही, चरणों में तेरे॥
पण्डित-पण्डित मरण हो मेरा, ऐसा अवसर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 9॥
तेरी.............॥

मैंने जो-जो पाप किए हों, वह सब माफ करो।
खड़ा अदालत में हूँ स्वामी, अब इंसाफ करो॥
मेरे अपराधों को गुरुवर, आज क्षमा कर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 10॥
तेरी.............॥

दु:ख नाश हों, कर्म नाश हों, बोधि-लाभ वर दो।
जिन गुण से प्रभु आप भरे हो, वह मुझमें भर दो॥
यही प्रार्थना, यही भावना, पूर्ण आप कर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 11॥

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो॥

कुंथलगिरि - 2005

शास्त्र

Vibhavsagar.in

youtube

instagram